RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 15वां

अंक : 60वां

आर्यांश अखिलेश जैन
जबलपुर

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

THIS IS TOO EASY

बोलते चित्र

" निशब्द " हो जाता हूँ
जब देखता हूँ दो घड़ी की..
रोटी के लिए इतनी मेहनत..
और एक हम हैं जो ....
नमक ज्यादा है
कहकर थाली खिसका देते है

INTERNET

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन – डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/
  श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

1	सूची	1
2	हमारी विरासत	2
3	संपादकीय	3–5
4	स्वर्ण के देवों की विशेषताएँ	6
5	मारने का अधिकार नहीं ...	7
6	तीर्थंकरों की विशेषताएँ	8
7	पुराण की प्यारी बात	9
8	शील की रक्षा	10–11
9	संस्कृति	12
10	पापों का प्रायश्चित	13–14
11	गिरनारजी आध्यात्मिक शिविर	15
12	कलेन्डर २०२३	16–17
13	धर्मायतन शिलान्यास समारोह	18
14	कविता	19
15	जाल से मुक्ति	20
16	आपके प्रश्न आगम के उत्तर	21
17	शिलालेख	22
18	अपने तीर्थों की सुरक्षा के लिये...	23
19	Type in English & Hindi Meaning	24
20	कपड़ों से बढ़ता पॉल्यूशन..	25–26
21	समाचार	27–28
22	चॉकलेट हुई खतरनाक	29
23	No Jains but Pak work.......	30
24	चित्र देखो.../जन्मदिन	31
25	अपने गुटखे से हो गया कैंसर	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क -500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

हमारी विरासत

थाईलेण्ड के पताया में प्रसिद्ध पैराइस आर्ट संग्रहालय में पद्मासन मुद्रा विराजमान जैन तीर्थंकर की प्रतिमा

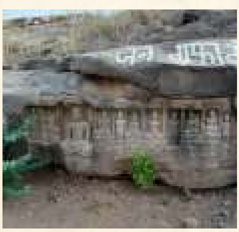

राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले की खण्डार तहसील में तारागढ़ ग्राम में स्थित खंडार किला है। यह किला रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान की सीमा पर है। इस किले में तीन प्रवेश द्वार हैं। ऊँचाई पर होने से यह किला शत्रुओं पर आक्रमण करना संभव नहीं था। इस किले पर पहले मेवाड़ के राजाओं का शासन था। ये सभी राजा जैन धर्म के अनुयायी थे। बाद में इस किले पर मुगल राजाओं ने शासन किया। इस किले में अतिप्राचीन सात मंदिर हैं। यहाँ विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अति मनोहर है। यहाँ सात तालाब भी हैं। यह हमारे जैन धर्म की विरासत है।

मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में कंकाली मंदिर है। वर्तमान में हिन्दू मंदिर के नाम से विख्यात इस मंदिर में बड़े-बड़े राजनेता आते हैं। यह मंदिर में पूर्व में जैन मंदिर था, परन्तु इस मंदिर को ताकत के बल पर और जैन समाज की निष्क्रियता से हिन्दू मंदिर में बदल दिया गया। इस मंदिर में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान है।

उम्मीदों के भंवर में डूबते बच्चे

भारत में हर दिन लाखों माँ अनगिनत सपनों के साथ उठतीं हैं और अपने बच्चे का टिफिन तैयार करतीं है और अपने बच्चों को तैयार कर स्कूल छोड़ने जातीं हैं या स्कूल की बस, आटो, वैन तक छोड़ते हुये लाखों अभिभावक अपनी आंखों में चमक लिये हुये अपने बच्चों को विदा करते हैं कि कुछ साल बाद उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करके उनके सपनों को पूरा करेंगे। उनकी आगे की पढ़ाई के लिये पूना, बंगलौर, मुम्बई, कोटा, हैदराबाद या विदेश में भेजकर पढ़ाई पूरी होने का इंतजार करते हैं। सुबह जल्दी उठना और अनमने ढंग से तैयार होकर स्कूल जाना और लगभग 8 से 9 घंटे की स्कूल की पढ़ाई के बाद घर आना और फिर ट्यूशन, होमवर्क में पूरा दिन बीत जाता है। इसके बाद Extra Activity के नाम पर डांस, स्वीमिंग, स्केटिंग की वीकली क्लासेस और न जाने क्या-क्या ? सालों तक यही रुटीन और घर पर होने वाली बातों में जब माँ बाप के सपने बच्चों के कानों तक पहुँचते हैं तो जाने-अनजाने उन पर एक प्रेशर बनने लगता है और कभी-कभी वह प्रेशर मन पर इतना हावी हो जाता है कि जो मेरे माता-पिता सपने हैं उतनी तो मेरी योग्यता ही नहीं। बस यहीं से मानसिक दबाव बनने लगता है और यह किसी दुर्घटना के रूप में सामने आता है।

पिछले कुछ दिनों में एजुकेशन हब बन चुके बड़े शहरों इंदौर, पुणे, बंगलौर, कोटा के कोचिंग सेन्टर्स में पढ़ने वाले अनेक बच्चों ने आत्महत्या कर ली। गाजियाबाद की 17 वर्षीय कृति ने आत्महत्या कर ली। जी मेंस का कट ऑफ 100 था और कृति ने 144 अंक प्राप्त किये थे मतलब कटऑफ से 44 अंक ज्यादा। इसके बाद भी पांचवी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कारण कृति को एस्ट्राफिजिक्स और क्वांटम फिजिक्स पसंद था परन्तु मम्मी के दबाव में साइंस लेना पड़ा। बस यही नाखुशी कृति की मौत का कारण बन गई। कृति ने अपने सुसाइड नोट में लिखा - ''मैं भारत सरकार से अपील करती हूँ कि जितनी जल्दी हो सके इन कोंचिंग संस्थानों को बंद कर देना चाहिये। कोचिंग संस्थान खून चूसते हैं। मम्मी! मैं साइंस के लिये नहीं बनी थी, साइंस तो आपको पसंद थी, मैंने तो आपको खुश करने के लिये साइंस चुना। मेरी छोटी बहन के साथ ऐसा मत करना।''

आत्महत्या करने वाले छात्रों में से ये एक कहानी हैं। इन तरह की घटनाओं को रोकने और सलाह देने के लिये एक प्रतिष्ठित अखबार ने HOPE (आशा) नाम की संस्था

खोली और इसमें एक्सपर्ट लोगों के साथ 3 डॉक्टर्स की टीम को रखा। इसमें पिछले 5 साल में 13 हजार छात्रों ने अपनी समस्या और पीड़ा बताई। फिर आत्महत्या के कारणों को गहराई से सर्वे कर एक रिपोर्ट तैयार की गई जिसमें ये कारण सामने आये -

1. कोचिंग एडमिशन से पहले स्क्रीनिंग नहीं - माता-पिता अपने बच्चों की योग्यता और क्षमता को समझे बिना लोगों की देखादेखी कोचिंग सेन्टर्स में एडमिशन करवा देते हैं उन्हें लगता है कि कोचिंग सेन्टर जादू कर देगा और कोचिंग सेन्टर्स भी धन कमाने के लालच में रहते हैं। वास्तव में कोचिंग में एडमिशन के पहले उसका मेंटल टेस्ट या स्क्रीनिंग होना चाहिये जिससे बच्चे सब्जेक्ट रुचि और उसकी क्षमता - योग्यता का सही आकलन हो सके।

2. माता - पिता की महत्वाकांक्षायें - हर माता-पिता चाहता है कि उसका बेटा डॉक्टर, इंजीनियर, कलेक्टर, जज जैसे बड़े पद को प्राप्त करे जिससे वे अपने सपने पूरे कर सकें लेकिन माँ-बाप को भी समझना चाहिये कि हर बच्चे में ऐसी योग्यता होना असंभव है इसलिये वे बच्चों के लिये प्रयास करें पर अपने सपने बच्चों पर न थोपें।

3. कोचिंग सेन्टर्स का खेल - कोटा जैसे बड़े शहरों की कोचिंग सेन्टर में एक ही कक्षा के अलग-अलग बैच होते हैं। कोचिंग सेन्टर चालाकी से सारे प्रतिभाशाली बच्चों को एक ही बैच में रखते हैं और सामान्य प्रतिभा वाले को एक बैच में। इससे उन्हें आगे बढ़ने की कोई प्रेरणा नहीं मिल पाती। फीस के लिये प्रेशर भी होता है।

4. होम सिकनेस - जब बच्चे दूसरे शहर जाते हैं तो उन्हें घर की बहुत याद आती है और नये शहर और नये परिवेश में सेटल होने में उन्हें समय लगता है और उनके होस्टल / पी.जी. और नये दोस्त अच्छे हैं तो वे जल्दी सेट हो जाते हैं वरना अनेक समस्यायें झेलना पड़तीं हैं। अभिभावकों को भी इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये कि उनके बच्चे किस वातावरण में रहेंगे।

5. अच्छा करने का दबाब - भारत की अधिकांश परिवार मध्यमवर्गीय हैं। इन परिवारों के लोग लोन लेकर, जेवर-जमीन बेचकर, उधार लेकर अथवा अपनी आवश्यकतायें कम करके हर तरह से बच्चों की अच्छी पढ़ाई करवाना चाहते हैं क्योंकि बिना पढ़ाई के अच्छी नौकरी तो मिलती ही नहीं, विवाह में भी समस्या आतीं हैं। अपने परिवार और माता - पिता की परिस्थिति को समझने वाले कई बच्चे दबाब में रहते हैं और बहुत मेहनत करते हैं पर जब सफलता नहीं मिलती तो वे निराश हो जाते हैं यही निराशा किसी अनहोनी का कारण बन जाती है।

6. संगति - घर में बच्चे परिवार की सुरक्षा, अनुशासन, स्नेह और संस्कारों में रहते हुये जीवन जीते हैं। होस्टल में बच्चों को पूरी आजादी होती है। एक छोटा सा गलत कदम उनके जीवन में विनाश ले आता है।

7. बच्चों से दूरी - **आजकल की भागदौड़ भरी जिन्दगी न तो बच्चों पास समय है और उनके अभिभावकों के पास। बच्चों से बात करने का समय न होने से उनको अभिभावक सुविधायें तो पूरी देते हैं पर समय नहीं। इससे उनकी आपस में दूरी बढ़ती जाती है। हर छोटी गल्ती पर डांटना या मारना भी बच्चों को अभिभावकों से दूर कर देती है फलस्वरूप डांट या मार के डर से वे अपनी समस्या अपने परिवार से शेयर करने से बचते हैं और यही बचने की प्रक्रिया शरीर से बच्चों को परिवार के साथ रखती है परन्तु मन से दूर ले जाती है।**

8. दूसरों से तुलना - जब अध्यापक या परिवार के लोग अपने बच्चे के के सामने किसी दूसरे बच्चे की तुलना उससे करते हैं तो दूसरे सफल बच्चे के सामने वह अपने को हीन समझने लगता है। जबकि सभी को समझना होगा कि हर जीव अपना कर्म उदय अलग होता है तो स्वभाविक रूप से सबकी शरीर, आयु, रूप, रंग, बुद्धि, संयोग, हानि-लाभ, सम्मान-अपमान अलग-अलग होते हैं तो हम क्यों अपनी सपने और सोच बच्चों पर थोपते हैं।

बस इसी सिद्धांत के पालन और कारणों के समाधान में सुरक्षा है। बाकी जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे का अटल सिद्धांत ही हमें आकुलता से दूर सकता है।

प्रेरणा

अक्षीम और अनंत बनो

कुयें ने अपने पिता समुद्र से शिकायत करते हुये कहा पिताजी सभी नदी नाले आपके घर में स्थान पाते हैं। आप प्रेमपूर्वक उन सबको अपने घर में स्थान देते हैं पर मुझसे ही पक्षपात क्यों ? आप मुझे स्थान क्यों नहीं देते ? पिता के लिये सभी पुत्र एक समान होते हैं। समुद्र ने उत्तर दिया - पुत्र बढ़ाना तुम अपने चारों ओर दीवार बनाकर बैठ गये हो, इसलिये तुम्हें अपने जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित रहना पड़ता है। असीम और अनंत का प्यार पाने के लिये स्वयं को असीम बनना पड़ता है। अपनी सीमाओं का त्याग करके उन्मुक्त रूप से अपने आपको व्यक्त करो, अपनी दीवारों को हटा दो। धरती को हरी-भरी तृप्त करती हुई तुम्हारी धारा जब बन्धन मुक्त हो जायेगी तब तुम सहज ही मुझमें आकर समा जाओगे।

स्वर्ग के देवों की विशेषतायें

1. देवों का आहार तो होता है परन्तु उनका निहार मल मूल, पसीना आदि सप्त धातुयें नहीं होतीं हैं।
2. देवों के बाल नहीं होते और उनके शरीर में निगोदिया जीव भी नहीं होते।
3. देवों की परछाईं नहीं पड़ती एवं उनकी पलक भी नहीं झपकती।
4. देवों के शरीर के अंग अत्यंत सुन्दर और समान अनुपात में होते हैं।
5. देवों का अकाल मरण नहीं होता अर्थात् किसी दुर्घटना, बीमारी, आत्महत्या आदि से देवों का मरण नहीं होता।
6. सम्यग्दृष्टि देव प्रतिदिन जिनेन्द्र आराधना करते हैं।
7. एक देव की कम से कम 32 देवियाँ होतीं हैं।
8. पंचम स्वर्ग के लौकान्तिक देव तीर्थंकर के दीक्षा कल्याणक में ही आते हैं और अहमिन्द्र आदि सोलहवें स्वर्ग के देव वहीं मध्य लोक में नहीं आते वे वहीं से तीर्थंकर को नमस्कार करते हैं। सौधर्म आदि अन्य देव तीर्थंकरों के कल्याणकों में आते हैं।
9. देवों को सर्दी-खांसी आदि किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होती।
10. देवों में स्त्री-पुरुष वेद ही होते हैं और वहाँ नंपुसक नहीं होते।
11. देवों के बच्चे नहीं होते।

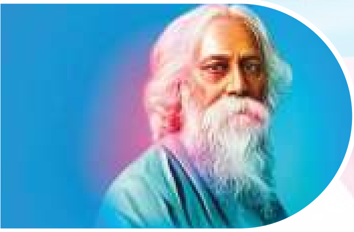

मारने का अधिकार नहीं

रवीन्द्रनाथ टेगौर के आश्रम शांतिनिकेतन में एक कुत्ता बहुत बीमार था। उसे बहुत तकलीफ हो रही था। उसे तड़पते देखकर एक प्रोफेसर ने रवीन्द्रनाथजी से कहा - गुरूदेव इस कुत्ते को बहुत तकलीफ है इसका कष्ट भी नहीं देखा जाता, इससे अच्छा तो मार डालना चाहिये, जिससे इसे कष्ट से छुटकारा मिल जायेगा।

रवीन्द्रनाथजी ने कहा - भाई ! यदि इस कुत्ते की जगह हमारे या तुम्हारे कुटुम्ब - परिवार का कोई व्यक्ति बीमार होता और वह बहुत कष्ट में होता तो क्या उसे भी गोली मारकर दुख से छुड़वाते और जब हम किसी को आयु को एक क्षण भी बढ़ा नहीं सकते तो किसी को मारने का अधिकार भी नहीं है। यह सुनकर प्रोफेसर को अपनी गल्ती का अहसास हो गया।

जय जवानः जय किसान

देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जब प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने फटी हुई धोती में शपथ ग्रहण की थी बाद में पता चला कि उनके पास दो ही धोती और दो ही कुर्ते थे। जब वो प्रधानमंत्री बने थे उनकी धर्मपत्नी ने उनसे कहा कि अब तो नई धोती ले लो तो उनका यह कहना था कि भारत के करोड़ों किसान ऐसी ही धोती पहनते हैं। मुझे नई धोती पहनने का अधिकार नहीं है। ऐसे थे भारत के लाल लालबहादुर शास्त्रीजी। जिन्होंने एक नारा दिया था - **जय जवानः -जय किसान।**

चहकती चेतना
बाल युवा त्रैमासिक पत्रिका

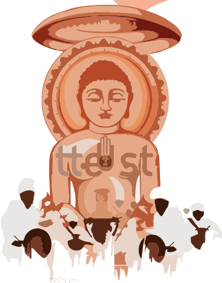

तीर्थंकरों की विशेषताएँ

1. तीर्थंकर की दाढ़ी-मूंछ नहीं होती है।
2. तीर्थंकर बालक माता का दूध नहीं पीते किन्तु दाहिने अंगूठे में ही इन्द्र अमृत लगा देते हैं जिसे चूसकर तीर्थंकर बड़े होते हैं।
3. तीर्थंकर गृहस्थ अवस्था में देवों के द्वारा लाया हुआ भोजन करते हैं और देवों द्वारा लाये वस्त्र और आभूषण पहनते हैं।
4. तीर्थंकर का कोई गुरू नहीं होता, वे स्वयं दीक्षा लेते हैं।
5. तीर्थंकर को किसी भी अवस्था में जिनमंदिर जाना आवश्यक नहीं होता।
6. तीर्थंकर की गृहस्थ अवस्था और मुनि अवस्था में कभी भी अन्य मुनिराज से मुलाकात नहीं होती।
7. तीर्थंकर के कल्याणकों के समय तीन लोकों के सभी जीवों को कुछ क्षण के लिये शांति का अनुभव होता है।
8. तीर्थंकरों मात्र सिद्ध परमेष्ठी को ही नमस्कार करते हैं अतः 'नमः सिद्धेभ्यः' कहकर मुनि दीक्षा लेते हैं।
9. तीर्थंकर के दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिन्ह दिखता है, वह इन्द्र द्वारा उन्हीं तीर्थंकर का वह चिन्ह निश्चित होता है। जैसे - तीर्थंकर आदिनाथ का बैल चिन्ह।
10. तीर्थंकर को जन्म से अवधि ज्ञान होता है।
11. तीर्थंकर को दीक्षा लेते ही मनःपर्यय ज्ञान हो जाता है।
12. तीर्थंकर तीर्थंकर अपने माता-पिता की अकेली संतान होते हैं।
13. तीर्थंकर की माता को ही सोलह स्वप्न आते हैं।
14. तीर्थंकर के श्रीवत्स का चिन्ह सीने पर निशान होता है।
15. तीर्थंकर के गर्भ में आने के 6 माह पूर्व से और जन्म होने तक 9 माह अर्थात् 15 माह अयोध्या नगरी में प्रतिदिन चार बार रत्नों की वर्षा होती है। एक बार में 3 करोड़ 50 लाख रत्नों की बारिश होती है।
16. तीर्थंकर की दिव्यध्वनि नियम से खिरती है।

पुराण की प्यारी बात

भरत चक्रवर्ती ने अपने महलों के द्वार पर सिर को स्पर्श करने वाली वन्दन - मालायें बंधवा रखी थी जिनमें रत्नों से बनी हुई चौबीस छोटी-छोटी घण्टियाँ थीं। जब भरत चक्रवर्ती महलों के द्वार से आते - जाते थे तो उन घण्टियों से सिर का स्पर्श होता था तभी घण्टियाँ से मधुर ध्वनि निकलती थी जिसे सुनते ही भरत को चौबीस तीर्थंकरों का स्मरण हो जाता था। मानो वे परोक्ष रूप से तीर्थंकरों को नमस्कार कर रहे हो।

- हरिवंश पुराण, 12/1-2

जिस समय भगवान नेमिनाथ को मोक्ष हुआ था उसी समय पाँचों पाण्डव वैराग्य धारण करके मुनि बन गये थे तथा शत्रुंजय नामक पर्वत पर जाकर घोर तप कर रहे थे। उसी समय दुर्योधन के वंशज क्षुयवरोधन नामक राजा ने उन्हें देखकर निश्चय किया कि ये पाण्डव मेरे वंशज दुर्योधन के घोर शत्रु थे इसलिये मुझे इसका बदला करना है। ऐसा विचार कर उसने मोटे लोहे के मुकुट, बाजूबंद, हार, कड़े, आदि बनवाकर उन्हें अग्नि में गरम करके लाल करके पाँचों पाण्डवों को पहना दिये। इसके कारण पाँचों पाण्डवों के सिर, छाती, कमर, बाजू की चमड़ी जल गई और खून बहने लगा परन्तु पाण्डवों ने भगवान नेमिनाथ से दीक्षा ली थी। वे अपने तप में अडिग थे। वे इस कष्ट को उपसर्ग समझकर अपनी आत्मा में लीन रहे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जन ये तीन मुनिराज तो मोक्ष गये परन्तु नकुल और सहदेव बड़े भाईयों को देखकर कुछ आकुलित हो गये इसलिये सर्वार्द्धसिद्धि में उत्पन्न हुये।

- हरिवंश पुराण, 65/17-23

बारह बकरों के समान बल एक गधे में, दस गधों के समान एक घोड़े में, बारह घोड़ों के समान बल एक भैंसे में, पाँच सौ भैसों का बल एक हाथी में, पाँच सौ हाथियों का बल केशरी सिंह में, पाँच सौ केशरी सिंहों का बल एक शार्दूल अष्टापद में है।

दस लाख अष्टापदों के समान बल एक बलभद्र में, एक करोड़ बलभद्रों के समान बल एक नारायण, अर्धचक्री में, नब्बे नारायणों का बल एक चक्रवर्ती में, एक करोड़ चक्री का बल एक सामान्य देव में, एक करोड़ देवों का बल एक इन्द्र में, अनंत इन्द्रों का बल एक तीर्थंकर में होता है परन्तु यह सब बल शरीर के आधीन होने से पराधीन, विनाशक, कम ज्यादा होने वाला है।

- तत्वार्थसार भाग 2, पृष्ट 180

शील की रक्षा

औरंगजेब बादशाह हिन्दुओं पर अत्याचार करता था, उसके साथ उसके अन्य अधिकारी और सैनिक भी हिन्दुओं पर अत्याचार किया करते थे। जब कोई मुसलमान अधिकारी किसी नगर में घूमने निकलते थे तब प्रजा में घबराहट फैल जाती थी और लोग अपने आपको घरों के अंदर बंद कर लेते थे। वे मुसलमान अधिकारी हिन्दु प्रजा को लूटते थे, उनकी सुन्दर बहन-बेटियों को उठाकर ले जाते थे और मंदिरों को तोड़ देते थे।

एक बार बिहार प्रांत के एक जिले का शासक मिर्जा अपने सिपाहियों के साथ नाव में बैठकर गंगा नदी में घूम रहा था। उसने देखा कि नदी के किनारे कुछ लड़कियाँ स्नान कर रही हैं। उनमें से एक लड़की बहुत सुन्दर थी। मिर्जा ने अपनी नाव रुकवा दी। मुसलमान सैनिकों को देखकर सब लड़कियाँ डरकर तुरन्त अपने घर चलीं गईं। मिर्जा ने उस सुन्दर लड़की के बारे में पता लगाया तो जानकारी मिली कि वह पास के गांव के ठाकुर होरलसिंह की बहन भगवती है। मिर्जा ने होरल सिंह को बुलवाया और कहा - मैं आपकी बहन को अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ और इसके बदले आपको पाँच हजार सोने के सिक्के और एक नगर उपहार में दूँगा।

मिर्जा की बात सुनकर ठाकुर होरलसिंह को भयंकर क्रोध आ गया और बोला - चुप रह मिर्जा ! ऐसी बात की तो तेरा सिर काट लूँगा। होरल सिंह का यह रूप देखकर मिर्जा ने अपने सिपाहियों को इशारा किया तो सिपाहियों ने होरल सिंह को पकड़कर उसके हाथ पैर बांध दिये। जब यह समाचार होरल सिंह के घर पहुँचा तो होरल सिंह की पत्नी जोर-जोर से रोने लगी और इस घटना के लिये भगवती को जिम्मेदार ठहराते हुये कहा कि तू नदी पर नहाने के लिये क्यों गई थी ? न तू नदी पर जाती और न ही मिर्जा तुझे देखता और न ही ....। भगवती ने अपनी भाभी से कहा - भाभी ! आप रो मत। मैं भैया को छुड़ाकर लाऊँगी। भगवती भागकर मिर्जा के सामने पहुँची और मिर्जा से बोली - मिर्जा साहब आप व्यर्थ ही परेशान हो

रहे हैं। मैं आपकी पत्नी बनूँ यह तो मेरा सौभाग्य है। आप मेरे भाई को छोड़ दीजिये मैं आपके साथ चलने के लिये तैयार हूँ, आप मेरे भाई को छोड़ दीजिये।

मिर्जा भगवती की बात सुनकर आश्चर्यचकित हो गया उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि भगवती उसे इतनी आसानी से मिल जायेगी। उसने होरल सिंह को छोड़ दिया। तब भगवती ने कहा - मुझे नाव पर डर लगता है, मैं पालकी पर चलूँगी आप मेरे लिये पालकी मंगा दीजियो मिर्जा ने तुरन्त सुंदर पालकी मंगवाई। सेवक पालकी में भगवती को बिठाकर चलने लगे और मिर्जा नाव से अपने महल वापस आने लगा। रास्ते में एक तालाब को देखकर भगवती ने सेवकों से कहा कि मुझे बहुत तेज प्यास लगी है, यह तालाब मेरे पिताजी ने बनवाया था, मैं इस तालाब का पानी पीकर उनका आशीर्वाद लेना चाहती हूँ। सेवकों ने भगवती इच्छा जानकर उसे पानी पीने की आज्ञा दे दी और पालकी को रोककर भगवती पानी पीने के लिये जाने दिया। भगवती अकेली तालाब के पास गई और ऊँचाई पर जाकर पानी में छंलाग लगा दी।सेवक यह देखकर घबरा गये और तुरंत गांव से जाल लाकर तालाब में डाला लेकिन तब तक भगवती के प्राण निकल चुके थे। जैसे ही मिर्जा और होरल सिंह को यह पता चला तो वे भागकर आये तो भगवती का शरीर ही तालाब से बाहर निकाला गया था। सभी समझ गये कि भगवती ने शील और अपने परिवार के सन्मान की रक्षा के लिये अपने प्राण त्याग दिये। ऐसी महान नारी थी भगवती।

प्रेरणा

भोजन के पूर्व ये करें

1. भोजन करने के पूर्व हाथ जोड़कर तीन या नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण करें।
2. ऐसा चिन्तन करें कि मध्यलोक में जितने भी दिगम्बर मुनिराज, आर्यिका माता, ऐलक, क्षुल्लक, व्रती आदि हैं उनका सबका आहार निरंतराय संपन्न हो।
3. मेरे क्षुधा रोग का नाश हो।
4. विश्व का कोई भी प्राणी भूखा न रहे।
5. यह भोजन मेरे ज्ञान और वैराग्य वृद्धि का कारण हो। इस प्रकार का चिन्तन करने से आहार दान की अनुमोदना होती है और आहार दान का सातिशय पुण्य का फल मिलता है।

यह कथन आचार्य श्री वीरसेन स्वामी ने श्री धवला ग्रंथ में किया है।

संस्कृति

एक बार शिवाजी महाराज के एक सेनापति युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद एक मुस्लिम कन्या को अपने साथ ले आये ताकि वह शिवाजी को अपनी ओर से सुन्दर भेंट कर सके। वह शिवाजी महाराज के सामने उपस्थित हुआ और बोला - महाराज! हमने किला जीतकर मुस्लिमों को भगा दिया है।

तुम वीर हो, तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी। शिवाजी बोले।

महाराज! इस विजय की खुशी में हम आपके लिये उपहार लाये हैं। सेनापति खुश होते हुये बोला।

कैसा उपहार सेनापति ? शिवाजी ने पूछा।

सेनापति ने उस कन्या को शिवाजी के सामने उपस्थित करते हुये कहा - महाराज! यह है आपका उपहार..।

उस कन्या को देखकर बुद्धिमान शिवाजी सेनापति की बुरी भावना समझ गये और क्रोध में बोले - अगर तुमने युद्ध में विजय प्राप्त नहीं की होती तो आज तुम्हारी इस गलत काम के कारण कठोर दण्ड देता। मेरी आंखों के सामने से हट जाओ। मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।

शिवाजी ने दूसरे सेनापति को आदेश दिया कि उस कन्या को तैयार कर महल में ले आओ। शिवाजी के आदेश के अनुसार उस कन्या को तैयार कर शिवाजी के महल में ले जाया गया। वह कन्या डर के मारे कांप रही थी। शिवाजी महाराज उसे कुछ देर तक देखते रहे और फिर उस कन्या से बोले - देवी! काश.. ! यदि मेरी माताजी इतनी सुन्दर होतीं तो मैं भी इतना सुन्दर होता। हे देवी! तुम डरो मत, तुम मेरी माता के समान हो। मेरी दृष्टि में प्रत्येक नारी सामान्य रूप से मेरी माँ के समान है, मेरे देश की संस्कृति में दूसरी नारी का सन्मान किया जाता है।

शिवाजी महाराज ने उस कन्या को उचित भेंट देकर ससन्मान उसके परिवार के पास पहुँचा दिया। ऐसे थे हमारे वीर शिवाजी। जीवन में चारित्र का बल ही सबसे बड़ा बल है। चारित्र की उज्ज्वलता किसी भी संकट का सामना करने का साहस देता है।

पापों का प्रायश्चित

जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में एक अलका नाम की अत्यंत सुन्दर नगरी है। बहुत समय पहले विद्याधरों का राजा महाबल राज्य करता था।राजा महाबल धर्म और नीति से प्रजा के विकास के कार्य करता था। राजा जिनधर्म का भक्त था। उसके स्वयंबुद्ध, महामति, संभिन्न और शतमति नाम के चार मंत्री थे। इनमें से स्वयंबुद्ध नाम का मंत्री भी जिनधर्म की भक्ति करता था बाकी के तीन मंत्रियों को जिनधर्म से द्वेष था।

एक दिन महाराज महाबल अपनी सभा में बैठे थे और उनका जन्मदिवस धूमधाम से मनाया जा रहा था। राजसभा के सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर बैठे हुये थे। राजा महाबल के अधीन अनेक राजा अपने कीमती उपहार राजा को भेंट कर रहे थे तभी प्रधानमंत्री स्वयंबुद्ध ने राजा से कहा कि महाराज ! आपको जो सन्मान प्राप्त हो रहा है वह आपके पुण्य का फल है। पुण्य से ऐसा वैभव प्राप्त होता है। बाकी के तीन मंत्रियों को स्वयंबुद्ध मंत्री की बात पंसद नहीं आई और उसकी बात को पलटते हुये कहा कि महाराज ! यह आपके साहस, बुद्धिमत्ता और शासन चलाने के तरीके का फल है। इसमें पुण्य की कोई बात नहीं है तब स्वयंबुद्ध मंत्री ने राजा दण्ड की घटना सुनाकर राजा का धर्म का महत्व समझाया। स्वयंबुद्ध मंत्री ने कहा कि इसी अलका नगरी में विद्याधरों में राजा दण्ड नाम का महाप्रतापी राजा हुआ। उसके पुत्र का नाम मणिमाली था। जीवन के अंतिम समय में राजा दण्ड राज्य का कार्य मणिमाली को देकर भोगों में लिप्त हो गया। राजा भोग विलास के परिणामों से मरकर अपने खजाने में अजगर सर्प हुआ। वह अजगर अपने पुत्र के अतिरिक्त किसी को भी खजाने के पास नहीं जाने देता था।

एक दिन राजा मणिमाली एक दिन अवधिज्ञानी मुनिराज के दर्शन करने के लिये गया और मुनिवर की अमृतमयी वाणी सुनकर उस अजगर के बारे में पूछा। मुनिवर

ने बताया वह अजगर आपके पिता का ही जीव है। भोग विलास की भावना अधिक होने से वह अजगर की पर्याय में पैदा हुये हैं।

राजा मणिमाली को अपने पिता के बारे में सुनकर बहुत दुःख हुआ। राजा मणिमाली ने खजाने में जाकर अजगर को संबोधित करते हुये कहा - हे जीव! इस जगत में कोई भी इन्द्रिय भोगों से तृप्त नहीं हुआ। यह संसार दुर्गुणों का समूह है। आप भोगों में लीन रहे इसलिये आप इस दुखमयी पर्याय में पैदा हुये हैं। अपने पुत्र के वाक्यों को सुनकर अजगर को पूर्वभव का स्मरण हो गया और उसे अपने पिछले जीवन पर बहुत दुख हुआ। उस अजगर ने भोजन-पानी का त्याग कर दिया और शरीर से अपनापन भी त्याग दिया। वह समाधिमरण पूर्वक मरकर स्वर्ग में ऋद्धिधारक देव हुआ। वह देव मणिमाली के पास आया और उपकार व्यक्त करते हुये उसे रत्नों का हार भेंट किया।

यह घटना सुनाते हुये स्वयंबुद्ध ने राजा महाबल से कहा कि आपने जो हार पहना हुआ है वह उसी देव के द्वारा दिया गया हार है। आपको ज्ञात हुआ होगा कि धर्म से मानव का कल्याण होता है और अधर्म से जीव का पतन होता है।

राजा महाबल ने स्वयंबुद्ध की प्रशंसा करते हुये धर्म उपदेश के लिये धन्यवाद दिया।

गिरनारजी में आयोजित आध्यात्मिक शिविर की झलकियाँ

चहकती चेतना जबलपुर

Calender 2023

01 January

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

02 February

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

05 May

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

06 June

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

09 September

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

10 October

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

जिन देशना
अनंत शांति का एकमात्र आधार

संपादक :
विराग शास्त्री, जबलपुर

चहकती चेतना

बाल युवा त्रैमासिक पत्रिका

03 March

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

04 April

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

07 July

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

08 August

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

11 November

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

12 December

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

पता : सर्वोदय 702, फूटाताल, जबलपुर म.प्र. 9300642434

धर्मायतन, जबलपुर में शिलान्यास कार्यक्रम की झलकियाँ

कविता

पानी सदा छानकर पीना
बिना छना जल कभी न पीना
बिना छना है बिसलरी का पानी
पेप्सी कोक की भी यही कहानी।
मोटे कपड़े से पानी छानो
ज्ञानी गुरु की बात है मानो
जीवों की रक्षा है करना।
छना पानी जैनी का गहना।
श्री जिनवर की आज्ञा मान।
जिनशासन का हो सन्मान।।

- विराग शास्त्री

गंदी चाट

गंदी चाट कभी न खाओ।
देखो यह मजदूर की बेटी
गंदे बिस्तर पर है लेटी
उसके पिता समोसे लाये
दोनों ने मिलकर के खाये
वे दोनों बीमार हो गये
ज्वर बुखार के तीव्र शिकार हो गये
गंदी चाट कभी न खाओ
खुद समझो सबको समझाओ

- प्रभुदयाल श्रीवास्तव

जैनी बच्चे सच्चे हम

जिनमंदिर ये प्रतिदिन जाते।
रात्रि भोजन कभी न करते।
बिना छना जल कभी न पीते।
जमीकंद से दूर ही रहते।
मुनिजन का करते सन्मान।
रखते जिनवाणी में ध्यान।
सप्त भयों से कभी न डरते।
सात तत्व का पाठ हैं पढ़ते
स्व पर भेद विज्ञान हैं करते।
सभी जीव भगवान हैं कहते।
वचन निभाने में हैं पक्के।
जैनी बच्चे सबसे अच्छे

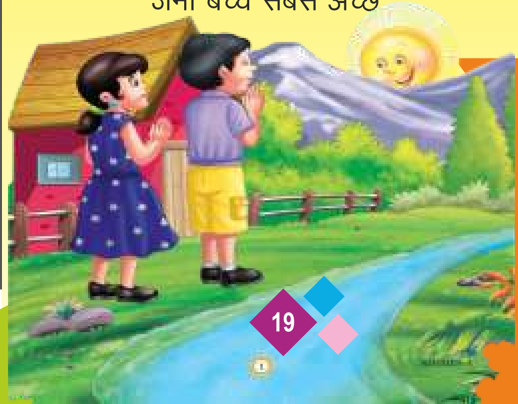

जाल से मुक्ति

गणेशप्रसादजी वर्णी बरुआसागर में मूलचंदजी के मकान में रहते थे। पास में कहार (मछली पकड़ने वाले) लोगों का मोहल्ला था। एक दिन रात्रि को ओलों की इतनी वर्षा हुई कि घरों के छप्पर (छत) फूट गये। सभी कहार राम-राम कहकर बचाने की प्रार्थना करते हुये कहने लगे - हे भगवान! इस कष्ट से रक्षा कीजिये, इस संकट में आपके सिवाय हमें कोई नहीं बचा सकते। तभी उनमें से दस वर्ष की एक बच्ची अपने माता-पिता से बोली - आप लोग व्यर्थ में राम-राम रट रहे हैं, यदि कोई राम होता तो क्या इस संकट में रक्षा नहीं करता ? और इस संकट में गल्ती भी आप सबकी है। आप सब प्रतिदिन सैकड़ों मछलियाँ मारकर बाजार में बेच देते हो। जैसे हमारे प्राण, वैसे ही उनके प्राण हैं। हर प्राणी को अपने प्राण प्यारे होते हैं। यदि हमें कोई सुई चुभाता है तो कितना दर्द होता है तो जब आप किसी मछली के प्राण तो उसे कितना भयंकर दर्द होता है यह वही जानती है। इसलिये मैं आप सबसे प्रार्थना करती हूँ कि भले ही भीख मांगकर पेट लेना परन्तु किसी जीव की हिंसा करके पेट मत भरिये।

लड़की की ज्ञान भरी बातें सुनकर पिता ने पूछा कि बेटी! तुझे इतना ज्ञान कहाँ से आया? वह लड़की बोली - मैं स्कूल तो नहीं जाती परन्तु बाई के पास जो पण्डितजी हैं, वे प्रतिदिन शास्त्र पढ़ते हैं और धर्म की अच्छी - अच्छी बातें बताते हैं। एक दिन उन्होंने कहा था कि संसार में कोई किसी को बचाता या मारता नहीं है बल्कि सब अपने - अपने कर्मों को फल भोगते हैं। जो जैसा कर्म करेगा उसे वैसा फल भोगना पड़ता है। यह बात मुझे पसंद आ गई। यदि कोई बचाने वाला होता तो हमें इस संकट से बचाने के लिये आता न..।

पिता ने पुत्री के सिर पर हाथ रखकर कहा कि बेटी! तुम सच कह रही हो। हमने न जाने कितनी मछलियों को भयंकर दर्द दिया है। मैं आज प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से मैं कभी मछलियों को या किसी भी जीव को नहीं मारूँगा और यह मछली पकड़ने के जाल को आग लगाकर नष्ट करता हूँ। यह कहकर पिता ने जाल को जला दिया। यह देखकर पूरे मोहल्ले के कहार समाज के लोगों ने प्रतिज्ञा ली कि हम आज से प्राणी हत्या नहीं करेंगे।

वर्णी का जिनवाणी का उपदेश अनेक जीवों को पाप से बचाने के काम आ गया। ऐसी ही है जिनवाणी की महिमा।

आपके प्रश्न आगम के उत्तर

प्रश्न -1. किसी का शाम को स्वर्गवास हुआ हो तो रात्रि में शव जलाना चाहिये या प्रातः दाह संस्कार करना चाहिये ?

उत्तर - मृत्यु के 48 मिनिट बाद शव में अनंत पंचेन्द्रिय जीव लब्ध पर्याप्तक सूक्ष्म मनुष्य के आकार के जीव उत्पन्न होने लगते हैं। इसलिये दाह संस्कार रात्रि को तत्काल कर देना चाहिये। यद्यपि रात्रि को जीवों की हिंसा तो होगी लेकिन रात भर शव रखने क बाद प्रातः दाह संस्कार करेंगे तो उसमें रात्रि से अनंतगुनी हिंसा होगी।

प्रश्न -2. जहाँ समवशरण की रचना होती है उस स्थान पर रहने वाले जीव जन्तु कहाँ चले जाते हैं ?

उत्तर - समवशरण की रचना जमीन से 500 धनुष ऊपर होती है और देव के द्वारा होने वाले अतिशय के प्रभाव से समवशरण की भूमि जीव रहित होती है। पूरी भूमि धूल और कंटक रहित हो जाती है।

प्रश्न -3. दिगम्बर भगवान की प्रतिमा पर भगवान का बायां हाथ ऊपर रहता है या दायां ?

उत्तर - दिगम्बर जिनप्रतिमा में भगवान का दाहिना हाथ ऊपर रहता है।

प्रश्न -4. दुनिया में सर्वश्रेष्ठ वस्तु क्या है ?

उत्तर - अपना आत्मा।

प्रश्न - 5. क्या किसी निर्दोष को बचाने के लिये बोले गये झूठ से पाप लगता है क्या ?

उत्तर - अहिंसा और सत्य की रक्षा के लिये बोला गया झूठ नहीं होता।

प्रश्न -6. रात्रि में अधिक लाइट जलाकर भोजन करने में क्या पाप है अच्छी लाइट में भी देखकर भोजन किया जा सकता ?

उत्तर - जीवों की उत्पत्ति रात्रि में वातावरण के प्रभाव से अधिक होती है और कई जीव इतने सूक्ष्म होते हैं कि वे आंखों से दिखाई नहीं देते। रात्रि भोजन में उन जीवों की हिंसा होने से महापाप लगता है। इसलिये रात्रि भोजन में पाप ही है।

- (सन्मति संदेश पत्रिका - 1979)

शिलालेख

आज किसी भी संस्कृति और सभ्यता की प्राचीनता और महत्व को बताने के लिये शिलालेखों को महत्वपूर्ण प्रमाण माना जाता है। पहले के समय में राजा, मंत्री अथवा समर्थशाली लोग बड़ी-बड़ी पत्थर की शिलाओं पर महत्वपूर्ण तथ्य उत्कीर्ण करवाते थे उसे ही शिलालेख कहा जाता है।

तमिल - सबसे पुराने तमिल शिलालेख मदुरै की जैन गुफाओं में मिलते हैं।

कन्नड़ - सबसे पुराने कन्नड़ शिलालेख जैन तीर्थ श्रवणबेलगोला में मिलते हैं।

मराठी - सबसे पुराने मराठी शिलालेख भगवान बाहुबली की प्रतिमा श्रवणबेलगोला पर मिलते हैं।

तेलगु - सबसे पुराने तेलगु शिलालेख जैन पहाड़ी वोमला गुट्टा में (आदि कवि जिन वल्लभा द्वारा लिखे हुये) मिलते हैं।

ब्राह्मी - सबसे पुराने ब्राह्मी शिलालेख सम्राट अशोक अतिरिक्त तमिलनाडु में जैन शिलालेखों और उदयगिरि की जैन गुफाओं में (सम्राट खारवेल का लिखा हुआ) मिलते हैं।

नई दुनिया

अपने तीर्थों की सुरक्षा के लिये इतना तो कर सकते हैं

पूरे देश में हमारे पवित्र जैन तीर्थों की सुरक्षा और पवित्रता खतरे में है। हमारे परम पवित्र पूज्य सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर और गिरनार जैसे अनेक तीर्थों पर जबरदस्ती कब्जा करने की कोशिश की जा रही है। सरकार और जैन धर्म के विरोधी लोग इसके लिये तो जिम्मेदार हैं ही, साथ ही जैन समाज भी इसकी अपराधी है। कम से कम हम इतना तो कर सकते हैं -

1. तीर्थ क्षेत्रों के पहाड़ों पर खाने पीने की चीजें न खरीदें।
2. पहाड़ पर चप्पल-जूते पहनकर न जायें।
3. किसी भिखारी को भीख न दें।
4. पहाड़ पर आवश्यकता होने पर ही डोली का प्रयोग करें और किसी भी वाहन का प्रयोग बिल्कुल भी न करें।
5. तीर्थ वन्दना का उद्देश्य मात्र भक्ति और आराधना हो, न कि शॉपिंग करना। तीर्थ क्षेत्रों से किसी भी प्रकार के कपड़े, चप्पल, साड़ी, पर्स आदि न लें।
6. तीर्थ क्षेत्रों पर आलू-प्याज आदि जमीकंद, रात्रि भोजन आदि न करें।
7. ब्रह्मचर्य से रहें।
8. तीर्थ क्षेत्रों पर शालीन वस्त्र ही पहनें और हिंसा से बने हुये श्रृंगार न करें।
9. तीर्थ यात्रा का उद्देश्य आत्म कल्याण की प्रेरणा हो न कि मनोरंजन या पर्यटन।

जैनी बच्चे सबसे प्यारे

आसमान में अनगिन तारे, जैसे भूपर बच्चे प्यारे।
लौकी खाओ टमाटर खाओ, आलू प्याज कभी न खाओ।
शराब मांस न हाथ लगाओ, महा अशुद्ध शहद न खाओ।
पिज्जा जंक फूड है घातक खाना, तन के नाशक मन के नाशक।
कोल्ड ड्रिंक भी कभी न पीना, छान-छान कर पानी पीना।
कर्म बंध न होंगे प्यारे, जैनी बच्चे सबसे प्यारे।।

- पण्डित राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

सहयोग प्राप्त

- 11000/- श्री विजयभाई जैन (हिंदमाता), दादर, मुंबई
- 5000/- धर्मायतन, जबलपुर के शिलान्यास के अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन वीतराग मंडल, जबलपुर द्वारा प्राप्त ।

Type in English Hindi Meaning

अहिंसा (Ahimsa)	Non-violence (Non existence of desires; Absence of anger, greed, ego and deceit)
अहिंसक (Ahinsak)	Avoidance of violence to others
अकर्ता स्वभावी (Akarta Swabhavi)	Without the power to bring changes in anyone else
अनाकुलता (Anakulta)	Free of desire, longing
अनंत सुख (Anant Sukh)	Infinite Happiness
अरिहंत / भगवान / सर्वज्ञ (Arihant / Bhagwan / Sarvagya)	Pure Soul who has no desires, knows everything and has infinite happiness
चक्रवर्ती (Chakravarthy)	King of All kings, he rules all land, Water and Air
गति (Gati)	4 Places Where impure souls are foundi.e., Animal, Human, Heven, Hell
जैन (Jain)	Religion That preaches steps to achieve our ultimate goal of being happy
शास्त्र (Shastra)	Knowledge of religion based on principles that are timeless
हितोपदेशी (Hitopdeshi)	One who shows us path to achieve our ultimate goal of being happy
कर्म (Karma)	Microscopic particles (Pudgal) attrated to soul due to mental dispositions
कषाय (Kashaay)	Imperfections in our character mainly of 4 kind anger, greed, ego and deceit
लोभ (Lobh)	Greed
पाप (Paap)	Sinful thoughts that bring worldly discomfort (Known as Bad Karma)
पुण्य (Punya)	Righteous thoughts that bring worldly pleasures (Known as Good Karma)
पूजा (Puja)	Prayer / Service offered to deity / god
पुजारी (Pujari)	Temple Priest Responsible for performing temple rituals
शदाचारी (Sadachari)	Righteousness
तीर्थ (Teerth)	Religious Place of Historical Importance
तीर्थंकर (Teerthankar)	Arihant's who enlighten the path of happiness for everyone
उपदेश (Updesh)	Lecture
वीतरागी (Veetragi)	Who is free of all attachment, expectation and judgment

क्या बढ़ते प्रदूषण के लिये हम भी जिम्मेदार हैं ....

कपड़ों से बढ़ता पॉल्यूशन

विश्व में प्रदूषण एक बड़ी समस्या बन रहा है और इसके दुष्प्रभाव भी देखे जा रहे हैं। हम सब इस समस्या की चिंता तो कर रहे हैं परन्तु क्या हम भी इस समस्या में भागीदार हैं..

रोटी, कपड़ा और मकान व्यक्ति की बेसिक आवश्यकता है। पहले कपड़े इज्जत और सुरक्षा के लिये उपयोग किये जाते थे इसलिये फैशन पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था परन्तु दिखावे और फैशन के दौर में आज यह स्टेटस सिंबल भी बन गया है, भले ही आलमारियाँ कपड़े से भरी हों तो भी कपड़े कम ही लगते हैं। हालत यह है कि जब भी बाजार या मॉल जाते हैं तो आवश्यकता न होते हुये भी कोई न कोई ड्रेस ले ही आते हैं या ऑनलाइन के ऑफर मन मोहते रहते हैं और नई समस्या यह कि अब कपड़े की जगह सिंथेटिक फाइबर के कपड़े मार्केट में आने लगे हैं।

क्या आपने कभी सोचा कि आपका यह शौक पर्यावरण पर कितना भारी पड़ रहा है। पहले के समय में घरों में एक दूसरे के साथ एक्सचेंज हो जाते थे। भाई - बहन, रिश्तेदार भी पुराने कपड़ों के लेन-देन को बुरा नहीं मानते थे। छोटे भाई अपने बड़े भाई के कपड़े को सिलाई करवा आनंद से पहन लिया करते थे इसमें परस्पर स्नेह भी बढ़ता था परन्तु आज यही कार्य अपमानजनक समझा जाने लगा है अब पुराने कपड़ों को उतरन माना जाने लगा है।

ड्रेसेज व्हेरायटी बढ़ी तो खरीदना भी आसान हो गया जिससे मार्केट में बिक्री बढ़ गई और यही फैशन पॉल्यूशन का कारण बन गया है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अधिकतर सिंथेटिक कपड़े सालों तक डिकम्पोज नहीं होते। कॉटन से बने कपड़े जल्दी गलकर नष्ट हो जाते हैं। भारत की जनसंख्या अधिक होने से कपड़ों का वेस्टेज अधिक होता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि जो कपड़े कस्टमर रिजेक्ट कर देते हैं, जो कपड़े बिक नहीं पाते हैं और जिन कपड़ों को कंपनी ही किसी कमी के कारण ब्रिक्री के लिये नहीं भेजती ऐसे इन कपड़ों का क्या होता है ?

इसका उत्तर हैं - जला देती है या कचरा घर में फेंक देती है। आपका हर रिजेक्ट किया गया कपड़ा वातावरण में कार्बनडायऑक्साइड छोड़ता है।

रीलिव कंपनी की फांउडर कीर्ति पूनिया के अनुसार कपड़ों में डिपेक्ट होने के कारण हर साल 10 लाख से अधिक कपड़े फेंक दिये जाते हैं। आजकल टेक्सटाइल इंड्रस्टी पेट्रोकेमिकल प्रोडक्ट्स पर ही निर्भर हैं जो पर्यावरण के लिये अच्छे संकेत नहीं है। आज के

समय पर फैशन इंड्रस्टी से 10 प्रतिशत कार्बनडायऑक्साइड निकल रही है जो कि इंटरनेशनल पलाईट्स और शिप कार्बनडायऑक्साइड से कई गुना ज्यादा है।

दुनिया में हर साल 30 करोड़ टन प्लास्टिक बनता है। दुनिया में 80 प्रतिशत कपड़े पॉलिएस्टर से बन रहे हैं। हर साल पॉलिएस्टर के लगभग 9 करोड़ टन प्लास्टिक के धागे बनते हैं। पॉलिस्टर भी प्लास्टिक का ही एक रूप है जो कि पर्यावरण में पॉल्यूशन का कारण है। भारत में पॉलिएस्टर फैक्ट्रियों से हर साल 28000 करोड़ कार्बनडायऑक्साइड निकलती है जो कॉटन के कपड़े बनाने से निकलने वाली कार्बनडायआक्साइड से तीन गुनी है। ब्रिटिश यूनिविर्सिटी यूनाइटेड स्टेट्स एनवायरमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी के अनुसार पॉलिएस्टर से बन रहे पृथ्वी के लिये बड़ा खतरा बनते जा रहे हैं। यह पॉल्यूशन के साथ ग्लोबल वार्मिंग भी बढ़ा रहे हैं। कॉटन कपड़े के नष्ट होने में 5 महीने का समय लगता है वहीं पॉलिएस्टर को नष्ट होने में 200 साल से अधिक का समय लगता है। हर बार एक कपड़े के धोने पर 7 लाख माइक्रोप्लास्टिक निकलते हैं जो कि अंत में नदियों और समुद्र के पानी के प्रदूषण का कारण बनता है। अमेरिका की एक एजेन्सी के अनुसार दान में दिये गये 84 प्रतिशत पुराने कपड़े कूड़ाघर पहुँच जाते हैं। आज लोग जितने कपड़े फेंक रहे हैं उससे कहीं ज्यादा पॉलिएस्टर के कपड़े खरीद रहे हैं।

कॉटर चादर पर सोने से शरीर का तापमान सामान्य रहता है जिससे जल्दी और अच्छी नींद आती है। लेकिन पॉलिएस्टर के कपड़े पहनने या उसकी चादर पर सोने या ओढ़ने से कई समस्यायें होतीं हैं और अनेक बीमारियाँ भी हो जातीं हैं।

इन सबसे बचने के लिये पहला काम हमें अनावश्यक कपड़ों की खरीददारी से बचना चाहिये और दूसरा काम हमे कॉटन के कपड़े ही उपयोग मे लेना चाहिये। इससे हम पापों से बच सकेंगे और बीमारियों से भी।

धरती में तापमान बढ़ाने वालीं गैसें

गैस	मात्रा
कार्बनडायऑक्साइड	79%
मीथेन	11%
नाइट्रस ऑक्साइड	7%
फ्लोरिनेटेड गैस	3%

खतरा

कुल कपड़े का 1 गारमेंट ही दुनिया में रिसाइकल हो पा रहा है।

भारत में हर 2 में 1 व्यक्ति उपयोग में न आने वालों कपड़ों को फेंक देता है।

भारत में की जनसंख्या के औसत से प्रतिव्यक्ति लगभग 1 किलो कपड़े फेंक देता है।

हर वर्ष 39 से 52 हजार माइक्रोप्लास्टिक हर व्यक्ति के शरीर में जा रहे हैं।

४५वाँ आध्यात्मिक शिविर
निर्वाण भूमि गिरनार में सम्पन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले शिविरों की श्रृंखला में 45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर भगवान नेमिनाथ की निर्वाण भूमि श्री गिरनारजी में दिनांक 15 नवम्बर से 21 नवम्बर 2022 तक संपन्न। इस अवसर पर मातुश्री रेवाबेन नागरदास टिम्बड़िया की स्मृति में श्री भरतभाई एवं श्री कमलेशभाई टिम्बड़िया परिवार कोलकाता / राजकोट के मुख्य आमंत्रण में विधान शिरोमणि श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के सीडी प्रवचन के साथ देश के उच्चकोटि के विद्वानों के द्वारा प्रतिदिन लगभग 7 घंटे जिनदेशना का लाभ प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम देश भर से लगभग 2500 साधर्मियों ने पधारकर लाभ प्राप्त किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्था अध्यक्ष श्री बसंतभाई एम. दोशी एवं महामंत्री श्री महीपालजी ज्ञायक के मार्गदर्शन में पण्डित रजनीभाई दोशी एवं श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन एवं श्री वीनूभाई शाह, मुम्बई व श्री अशोक जैन जबलपुर के संयोजन में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। साथ ही आगामी 46वाँ आध्यात्मिक शिविर 23 नवम्बर से 29 नवम्बर 2023 तक शाश्वत सिद्धभूमि सम्मेदशिखरजी में आयोजित करने की घोषणा की गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम का प्रसारण जिनदेशना के यूट्यूब चैनल पर किया गया।

चहकती चेतना के नवीन तिथि कलेण्डर का प्रकाशन

प्रतिवर्ष की भांति चहकती चेतना के नवीन वार्षिक रंगीन केलेण्डर का प्रकाशन किया जा रहा है। विदित हो कि प्रतिवर्ष की तरह यह केलेण्डर अप्रेल माह 2023 से मार्च 2024 तक की तिथि वाला होगा। इस केलेण्डर में विशेष थीम के साथ सभी तिथियाँ, जैन पर्व, अष्टमी-चतुर्दशी, राष्ट्रीय एवं प्रमुख धार्मिक पर्वो का उल्लेख होगा। इसका प्रत्येक पेज तिथि की जानकारी देने के साथ ज्ञानवर्द्धक होगा।

इसमें प्रतिमाह के पेज के नीचे जाने के लिये आपके विज्ञापन आमंत्रित हैं। आप अपनी फर्म, संस्था, व्यापारिक प्रतिष्ठान, परिवारिक सौजन्य का उल्लेख कर सकते हैं। इसके लिये आप हमारा संपर्क 9300642434 पर कर सकते हैं।

जबलपुर में नवीन जिनमंदिर का शिलान्यास सम्पन्न

मध्यप्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर में 17 एवं 18 दिसम्बर को नवीन जिनमंदिर का शिलान्यास संपन्न हुआ। नगर के मध्य में लगभग 8000 वर्गफुट भूमि पर निर्मित होने वाले इस सम्पूर्ण जिनमंदिर और परिसर को धर्मायतन का नाम दिया गया है। इस अवसर पर प्रथम दिन प्रातःकाल मंगल कलश एवं श्री जिनेन्द्र शोभायात्रापूर्वक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इसके बाद श्री सर्वज्ञ देव विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पं. सुबोधजी सिंघई सिवनी, पं. संजय शास्त्री जेवर, पं. विपिन शास्त्री नागपुर, डॉ. विवेक जी छिन्दवाड़ा आदि विद्वानों के द्वारा स्वाध्याय एवं गोष्ठी का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में त्रिशला महिला मण्डल एवं चेतना मंडल द्वारा संयुक्त रूप से सम्राट चन्द्रगुप्त पर आधारित प्रभावशाली नाटिका प्रस्तुत की गई। दूसरे दिन पूजन एवं स्वाध्याय के बाद शिलान्यास सभा का आयोजन हुआ और कार्यक्रम में अनेक श्रेष्ठियों के द्वारा शिलान्यास की मुख्य विधि संपन्न हुई। इस कार्यक्रम में देश के अनेक नगरों के अनेक साधर्मीजनों ने पधारकर शिलान्यास स्थल पर ईंट रखकर जिनमंदिर निर्माण की अनुमोदना की।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर के निर्देशन में, डॉ.मनोजजी, ब्र. श्रेणिकजी, पण्डित अशोकजी उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री विजयजी बड़जात्या इंदौर ने की । शिलान्यास सभा का संचालन श्री विराग शास्त्री जबलपुर ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का प्रसारण जिनदेशना के यूट्यूब चैनल पर किया गया।

जिनमंदिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जबलपुर स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का 23वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 27 दिसम्बर 2022 से 1 जनवरी 2023 तक भक्तिपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के संपादन हेतु प्रख्यात मधुर भजन गायक एवं विद्वान पण्डित संजीवजी उस्मानपुर दिल्ली पधारे। साथ ही ब्र. सुनीलजी शिवपुरी और पण्डित राजेन्द्रकुमारजी के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के आमंत्रणकर्ता श्रीमति मणिप्रभाजी- शरदजी शुचिताजी परिवार जबलपुर थे। सभाओं का संचालन श्री विराग शास्त्री द्वारा हुआ एवं विधान में डॉ. मनोजकुमारजी, ब्र. श्रेणिकजी, पण्डित अभिनयजी शास्त्री का सहयोग प्राप्त हुआ।

चॉकलेट हुई खतरनाक

क्या आपके बच्चे बहुत अधिक चॉकलेट खाते हैं तो आप सावधान हो जाइये। अमेरिका की एक कम्पनी की सर्वे के अनुसार 28 अलग - अलग तरह की डार्क चॉकलेट में लेड और कैडनियम जैसी हेवी मेटल घातक तत्व की अधिकता पाई गई है। यह बच्चों से लेकर बुजुर्गों को बीमार बना रहा है। इसका असर बच्चों पर अधिक होता है।

शरीर में लेड की मात्रा बढ़ने से बच्चों का न्यूरोलॉजिकल विकास नहीं हो पाता। इससे दिमाग छोटा रह जाता है। बच्चा मानसिक तौर पर हमेशा के लिये बीमार हो सकते हैं, कई बार मानसिक संतुलन पूरी तरह बिगड़ने की आशंका होती है। डॉर्क चॉकलेट में लेड और कैडनियम जैसे भारी तत्वों की अधिकता से हाई बीपी की समस्या हो सकती है। छोटे बच्चे भी बीपी के मरीज बन सकते हैं।

डार्क चॉकलेट में कैडनियम से किडनी फेल तक हो सकती है। विश्व के कई देशों में चॉकलेट में लेड की अधिकतम मात्रा 0.5 माइक्रोग्राम और कैडनियम की अधिकतम मात्रा 4.1 माइक्रोग्राम है।

अगर कोई दिन में पाँच बार चॉकलेट खाता है तो लेड और कैडनियम अलग-अलग तरीकों से चॉकलेट में मिलते हैं।

अव्यस्थित खान-पान, बाजारों के सामान का बढ़ता प्रयोग, धन के लालच में खाने की सामग्री में मिलावट, सब्जियों और फलों को पकाने के लिये घातक केमिकल का प्रयोग, भोजन में समय का ध्यान न रखना जैसे अनेक कारणों से समय के साथ नई बीमारियाँ भी बढ़तीं जा रहीं हैं। वर्तमान में इसका एक मात्र उपाय सावधानी ही है। हम भोजन जितना शुद्ध और सात्विक करेंगे तो बीमारियों का आशंका उतनी कम रहेगी।

चित्र देखो - कविता लिखो

इस चित्र को ध्यान से देखिये। क्या आपके मन कोई कविता बन रही है तो जल्दी से पेन उठाइये और एक प्यारी सी धार्मिक कविता लिख दीजिये और हमें भेज दीजिये 9752756445 के व्हाट्सएप पर। ध्यान रहे कि कविता इन चित्रों के आधार पर स्वयं के द्वारा बनाई हुई हो, हिन्दी या इंग्लिश में। कविता धार्मिक होनी चाहिये। प्रथम 5 विजेताओं को मिलेगा आकर्षक पुरस्कार और चहकती चेतना में उनके नाम प्रकाशित किये जायेंगे।

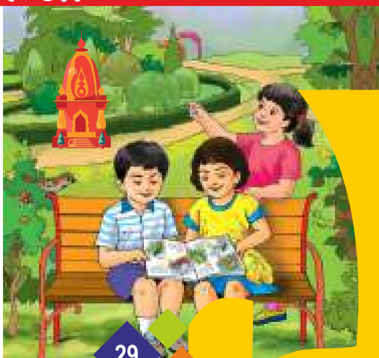

No Jains, but Pak works to restore 40 temples

Yudhvir.Rana@timesgroup.com

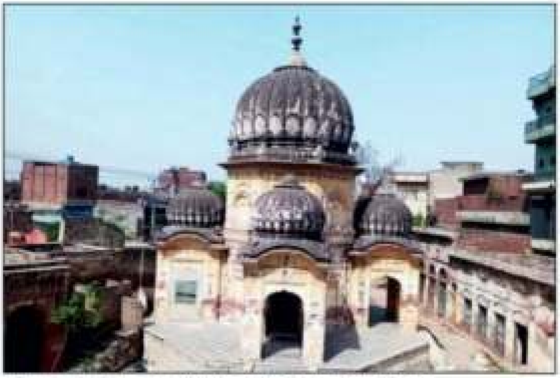

Jain temples in Lahore (top); and Gujranwala, Pakistan

Amritsar: Concerted efforts are on to preserve Jain heritage have begun in Pakistan with the Jain community and Pakistan's Evacuee Trust Property Board (ETPB) planning to save around 40 Jain temples present in the neighbouring country.

Earlier this month, ETPB deputy secretary Sayed Faraz Abbas informed that after renovating the Jain Digambar temple situated at Old Anarkali in Lahore, the ETPB has now started the restoration of Jain Shwetamber Ghar Mandir, the 'samadhi' of Jain acharya Atamaramji, in Gujranwala.

As an aftermath of the Babri Masjid demolition in India in 1992, several temples, including the Lahore Jain temple, were attacked by frenzied mobs. In recent past, former chief justice of Pakistan Gulzar Ahmad had directed to inspect and renovate the temple. "We were given one year's time to renovate the temple but we did the job in a record 8 months' time," Faraz said adding that around 70 lakh Pakistani rupees were spent to restore the grandeur of the temple. The renovation work restored the old structure left intact in the 1992 attack, along with plastering of walls, installation of gates and landscaping.

ETPB had also planned to install a statue of Bhagwan Adinath at what was once known as Jain Mandir Chowk. However, Delhi's Jain Heritage Foundation's secretary Ashwani Jain had suggested them to instead install a paraflex banner as there were no Jains left in Lahore to perform the daily rituals. Sources claim there were as many as 40 Jain temples in Pakistan, with 14 in Sindh's Nagarparkar area alone, but no Jains to take care of them.

ETPB spokesperson Aamir Hashmi informed that a delegation of the British High Commission, Lahore visited the Jain temple in Lahore on September 1.

The delegates including Annabell Gerry, Alex Ballinger and Sana Zia took a keen interest in the renovation of the Jain temple and also expressed their interest in visiting other historical Sikh and Hindu shrines in the near future.

चहकती चेतना
बाल युवा त्रैमासिक पत्रिका

चित्र देखो कहानी लिखो

इस चित्र को ध्यान से देखिये। क्या आपके मन कोई कहानी बन रही है तो जल्दी से पेन उठाइये और एक प्यारी सी धार्मिक कहानी लिख दीजिये और हमें भेज दीजिये 9752756445 के व्हाट्सएप पर। ध्यान रहे कि कहानी इन चित्रों के आधार पर स्वयं के द्वारा बनाई हुई हो, हिन्दी, इंग्लिश या मराठी में। कहानी धार्मिक होनी चाहिये। प्रथम 10 विजेताओं को मिलेगा आकर्षक पुरस्कार और चहकती चेतना में उनके नाम प्रकाशित किये जायेंगे।

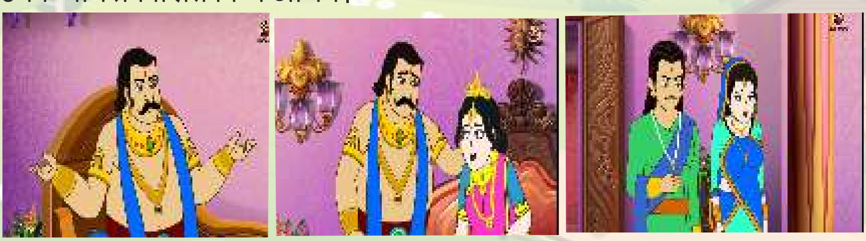

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनायें

जन्म-मरण के अभाव की भावना भाने में ही
जन्म दिन मनाने की सार्थकता है।

जल्दी से भगवान बनो तुम, अब अपना कल्याणक करो तुम।
जन्म मरण का नाश करो तुम, सिद्ध शिला पर वास करो तुम।।

दर्शन जिनवर का करो, फिर दूजा हो कार्य।
देव शास्त्र गुरू की छांव में, पढ़ो बढ़ो अध्याय।।

अध्याय दर्शन जैन, मुम्बई 5 सितम्बर 2022

आप भी अपने बच्चे के जन्म दिवस पर शुभकामनायें प्रकाशित करवा सकते हैं।
आप बच्चे का नाम, फोटो, जन्म तिथि, पता हमें 9752756445 पर भेज सकते हैं।

अपने बनाये गुटखे से हो गया कैंसर

अपने बनाए गुटखे से हो गया कैंसर!

मुंबई। कई सालों से गुटखे में इस्तेमाल होने वाली खुशबू बनाने का कारोबार कर रहे 52 साल के विजय तिवारी को मुंह का कैंसर हो गया है। छह कीमोथेरेपी और 36 चरणों के रेडिएशन के दर्दनाक अनुभव के बाद तिवारी ने इस कारोबार को बंद करने का फैसला किया। तिवारी ने बताया कि गुटखे की मैन्युफैक्चरिंग के दौरान केसर, इलायची आदि के फ्लेवर के बजाय सस्ते केमिकल का इस्तेमाल किया जाता है। गुटखे की क्वालिटी जांच के लिए इसे लगातार चखने की वजह से तिवारी को इसकी लत लग गई और वे कैंसर का शिकार हो गए। अंग्रेजी अखबार में प्रकाशित एक खबर के अनुसार 2011 में जब तिवारी को मुंह के कैंसर का पता चला तो उन्होंने गुटखे में इस्तेमाल होने वाली खुशबू बनाने के अपने बिजनेस को बंद करने का निर्णय लिया।

कई वर्षों से गुटखे में प्रयोग होने वाली सुगंध का फ्लेवर बनाने वाले मुम्बई निवासी 52 वर्षीय विजय तिवारी को मुंह का कैंसर हो गया है। जिसके कारण उनकी छह कीमोथेरेपी और 36 रेडिएशन हो गये हैं। कैंसर के इलाज में भयंकर तकलीफ भोगने वाले विजयकुमार ने गुटखे के फ्लेवर का व्यापार बंद कर दिया है।

तिवारी ने बताया कि गुटखे की मैन्यूफैक्चरिंग के दौरान केसर, इलायची आदि के फ्लेवर के बजाय सस्ते केमिकल का प्रयोग किया। गुटखे का स्वाद जांचने के लिये इसे खाना भी पड़ता था परन्तु लगातार गुटखा खाने के कारण तिवारी जी इसकी आदत पड़ गई और वे कैंसर के शिकार हो गये। अंग्रेजी अखबार में प्रकाशित एक खबर के अनुसार 2011 में तिवारी को जब मुंह के कैंसर की बीमारी का पता चला तो उन्होंने बिजनेस का बंद करने का फैसला किया।

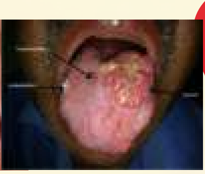

आपसे भी निवेदन है कि गुटखा, पान, बिड़ी-सिगरेट, तम्बाकू आदि का उपयोग कभी न करें। एक बार ये आदत लगने के बाद इसे छोड़ना मुश्किल लगता है और इसके कारण अनेक बीमारियाँ भी हो जातीं हैं।

आपका साथ हमारा प्रयास - हो जिनधर्म का शंखनाद

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर

आपकी यह संस्था विगत लगभग 17 वर्षों से बाल-युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रवाहित करने का प्रयास कर रही है। इस क्रम में तत्वप्रचार की नवीनतम विद्या का प्रयोग करते हुये जिनधर्म की कविताओं, कहानियों, गीतों के वीडियों का निर्माण किया गया। साथ ही रोचक धार्मिक गेम, कविताओं-कहानियों की चित्र सहित पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। बाल वर्ग में निरंतर धर्म की जाकिरियाँ प्रवाहित करने हेतु 2006 में चहकती चेतना पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका को पाठकों एवं अनेक विद्वानों का भरपूर प्यार और विश्वास प्राप्त हुआ है।

संस्था के पास जिनधर्म के प्रचार की अनेक योजनायें है आपका सहयोग मिलता रहेगा तो हम आगे भी समाज के लिये यह कार्य निरंतर करते रहेंगे। आशा है आपका सहयोग और विश्वास प्राप्त होगा। आप निम्न प्रकार से हमारा सहयोग कर सकते हैं।

शिरोमणि परम संरक्षक : 1 लाख रुपये। **परम संरक्षक** : 51 हजार रुपये
संरक्षक : 31 हजार रुपये । **परम सहायक** : 21 हजार रुपये। **सहायक** : 11 हजार रुपये।
सहायक सदस्य : 5 हजार रुपये। **सदस्य** : 1000 रुपये।

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सीडी और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्छ सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें।

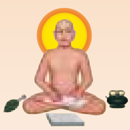

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें :

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्ययन।
- पूज्य गुरुदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर।
- छठवीं से दसवीं तक अध्ययन की सुविधा।
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार।
- समय-समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम।
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल। • शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान।
- सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क। • लगभग सभी खेलों की सुविधा
- योगा क्लास। • इंग्लिश स्पीकिंग। • कम्प्यूटर क्लास। • म्यूजिक क्लास
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन।
- प्रतिवर्ष शैक्षणिक तीर्थ यात्रा। • विशाल पुस्तकालय की सुविधा।
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें। • छठवीं कक्षा में प्रवेश।
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास।

प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2023

कहान शिशु विहार

राजकोट रोड, सोनगढ़, जि.भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात
फोन : 02846-244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519
विराग शास्त्री : 9300642434, प्रियम शास्त्री : 9887986898
आप प्रवेश फार्म हमारी वेबसाइट : www.kahanshishuvihar.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं।
Email : kahanshishuvihar@gmail.com

चलो देवलाली

रजत जयंती वर्ष

चलो देवलाली

अपने बच्चों को विरासत में सम्पत्ति नहीं,
जिनधर्म के संस्कार दीजिये

25वाँ आध्यात्मिक बाल संस्कार शिक्षण शिविर

(8 वर्ष से 14 वर्ष तक के आयु के
बालक-बालिकाओं को प्रवेश)

आज ही पंजीयन करायें

आज ही पंजीयन करायें
पंजीयन कराने की
अंतिम तिथि
15 अप्रैल 2023

सोमवार, 1 मई से
रविवार, 7 मई
2023 तक

स्थान - श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, लाम रोड, देवलाली जि.नासिक (महा.)

निर्देशक
विराग शास्त्री,
जबलपुर
7000104951

आयोजक - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, झवेरी बाजार, मुंबई

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें : वीनूभाई शाह - 9757107511/9820494461 ■ उल्लास भाई जोबालिया - 9820012132/9757386612 ■ उर्विश शास्त्री - 9079612682

मंगल आमंत्रण

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजी स्वामी की 134वीं जन्म जयंती
उपकार दिवस के अंतर्गत

दिल्ली नगर में

AATMASADHNA KENDRA DELHI

गुरुवाणी मंथन शिविर

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का प्रवेश शिविर एवं
12वां दीक्षांत समारोह

शनिवार,
18 मार्च से
बुधवार,
22 मार्च
2023

निर्देशक :
विराग शास्त्री
जबलपुर
9300642434

विशिष्ट विद्वत समागम :
- पं.देवेन्द्र कुमारजी बिजौलिया
- पं.रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर
- पं.अनिल शास्त्री, भिण्ड

LIVE ON
JINDESHNA
YOUTUBE CHANNEL

संपर्क :
श्री नरेश लुहाड़िया
9811168485

स्थान : अध्यात्म तीर्थ, आत्म साधना केन्द्र, घेवरा मोड़, दिल्ली

आयोजक श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द-कहान आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली

आवास हेतु संपर्क : मैनेजर : सुरेन्द्र जैन - 7011697305
आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन में प्रवेश संबंधी जानकारी के लिये कु. निकिता जैन - 6260238718 से संपर्क करें।